शोध मंथन, Impact Factor 6.726 (SJIF), UGC No. 40908 ISSN: (P): 0976-5255 (e): 2454-339X
Vol. X, No.II, pp (561-565) April - June 2019

भारतीय राष्ट्रवाद और वाजपेयी

शिप्रा भारती
शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग, ति०मां०भा०वि०वि०, भागलपुर
Email:shipravishwakarma@gmail.com

सारांश

राष्ट्रवाद, राष्ट्र की आत्मा और जीवन शक्ति को पुनर्जागृत करने का सशक्त माध्यम है। यह राष्ट्र के हितो का जागरूक रक्षक एवं राजनीतिक चेतना की अग्रदूत है। राष्ट्रवाद का प्रधान लक्षण अतीत की गहराई का अनुसंधान है। भारतीय राष्ट्रीयता को किसी अंग्रेजी इतिहासकार अथवा राजनीतिक चिंतक के प्रमाण पत्र की आवष्यकता नहीं हुई। भारत में राष्ट्रवाद का आधुनिक स्वरूप अंग्रेजी शासन के अन्तर्गत बौद्धिक पुर्न जागरण एवं दासता से मुक्ति के प्रयास में परिलक्षित होता है। भारतीय राष्ट्रवाद के मूल में तत्त्वता नैतिक और अध्यात्मिक आकांक्षाओं का प्राधान्य था। भारतीय राष्ट्रवाद के कुछ नेताओं ने खुले रूप से इस बात का समर्थन किया कि हमें जानबूझकर अपने प्राचीन धर्मग्रंथों को अपनी जीवन में उतारना चाहिए। इन्हीं नेताओं में अटलजी का नाम एक आध्याय के तौर पर देखा जा सकता है। उनका मानना था कि जिस दिन राष्ट्रवाद भारतीय के दिल में बैठ जाएगा, स्वार्थवाद, भ्रष्टाचार, जातिवाद, संप्रदायवाद और क्षेत्रवाद एवं भाषावाद राष्ट्रवाद की गंगा में समाहित हो जाएगा।

प्रस्तावना

"भारत जमीन का टुकड़ा नहीं, जीता जागता राष्ट्र पुरूष है। हिमालय इसका मस्तक है, गौरी शंकर शिखा है। कश्मीर किरीट है, पंजाब और बंगाल दो विशाल कंधे है। दिल्ली इसका दिल है। बिन्ध्याचल कटि है, नर्मदा करधनी है। पूर्वी और पश्चिमी घाट, दो विशाल जंघाएँ है कन्याकुमारी इसके चरण है, सागर इसके पग पखारता है। पावस के काले–काले मेघ इसके कुन्तल केश है। चाँद और सूरज इसकी आरती उतारते है। मलमालिन चँवर डुलाती है। यह वंदन की भूमि है, अभिनंदन की भूमि है। यह तर्पण की भूमि है, यह अर्पन की भुमि है। इसका कंकर कंकर शंकार है, इसका बिंदु–बिंदु गंगाजल है। हम जिएँगे तो इसके लिए मरेंगे तो इसके लिए।"[1]

पूर्व प्रधानमंत्री वाजपेयी जी के ये वाक्य न सिर्फ उनके राष्ट्रप्रेम को दर्शाता है बल्कि राष्ट्रवाद के प्रति उनकी संपूर्ण अवधारणा को भी स्पष्ट करता है।

'राष्ट्रवाद' को सझमने से पूर्व हमें 'राष्ट्र' को समझना होगा। 'राष्ट्र' मात्र शब्द नहीं अपितु एक धारणा है जो एकता के भाव–प्रेम को प्रदर्शित करती है। सामान्यता लोग राष्ट्र का अर्थ एक निश्चित सीमा में रहनेवाली जाति से लगाते है, परंतु यह अर्थ सर्कीणता से परिपूर्ण है। 'राष्ट्र' शब्द में एक राजनीतिक धारणा छिपी हुई है और राष्ट्रकेवल उसी जाति अथवा भौगोलिक सीमा में रहने वाले समूह को कहा जा सकता है जिसको राजनीतिक स्वाधीनता प्राप्त है।

इस प्रकार राष्ट्र को परिभाषित करते हुए कहा जा सकता है कि "एक ऐसा जन समूह जो भौगोलिक सीमाओं में एक निश्चित देश में रहता है एवं समान परम्परा समानहितों तथा समान भावनाओं से बंधा हो और जिसमें एकता के सूत्र में बंधे रहने की उत्सुकता तथा समान राजनैतिक महत्वकांक्षाएँ पाई जाती हो।"[2] राष्ट्रवाद के निर्णायक तत्त्वों में सबसे महत्वपूर्ण तत्व है 'राष्ट्रीयता की भावना'। राष्ट्रीयता अपने मूल रूप में एक अध्यात्मिक और सांस्कृतिक भावना है। राष्ट्रीयता विभिन्नता में एकता की भावना है। राष्ट्रीयता की भावना का विकास कब और कैसे हुआ निश्चिय तौर पर कहा नहीं जा सकता परंतु सामान्यतः यह कहा जाता है कि प्राचीनकाल में राष्ट्रीयता का विकास तब से माना जा सकता है जब कि लोगों ने अपनी मूल सामाजिक प्रवृत्तियों के फलस्वरूप समूहों और कबीलों में रहना प्रारंभ किया होगा। किंतु भारत में राष्ट्रवाद प्राचीन इतिहास की देन नहीं अपितु अपने देश को पश्चिमी देशों के समकक्ष लाने की भावना का परिणाम है। भारतीय राष्ट्रवाद एक आधुनिक तत्व है जिसका अध्ययन अनेक दृष्टिकोणों से महत्वपूर्ण है। भारत में राष्ट्रवाद के उदय की प्रक्रिया अत्यंत जटिल और बहुमुखी रही है। भारत विविध भाषा–भाषी और अनेक धर्मों के अनुयायियों वाले विशाल जनसंख्या का देश है। भारत की सामाजिक, आर्थिक तथा राजनीतिक संरचना तथा विशाल आकार के कारण यहाँ पर राष्ट्रीयता का उदय जिस प्रकार हुआ शायद ही किसी देश में इस प्रकार की प्रकट भूमि में राष्ट्रवाद का उदय हुआ है। मार्ग रीटा वर्न्स के शब्दों में "वास्तव में भारतीय राष्ट्रवाद के विकास की कहानी, भारतीय राष्ट्रीयता के विकास की कहानी है। सुशासन से स्वशासन स्वराज्य से पूर्ण स्वतंत्रता की यात्रा क्रमशः विकसित राजनीतिक चेतना के प्रस्फुटन का इतिहास है।"3

भारत में राष्ट्रवाद का जन्म ब्रिटिश सरकार की नीतियों के फलस्वरूप कुछ विशिष्ट वर्गों के सोच का परिणाम है। इन्हीं में से एक महत्त्वपूर्ण नाम रहा, भारतीय राजनीति को साकारात्मक स्वरूप प्रदान करने वाले देश के प्रिय राजनेता 'अटलबिहारी वाजपेयी' का। अपनी प्रतिभा, नेतृत्व क्षमता और लोकप्रियता के कारण वे चार दशकों से भी अधिक समय तक भारतीय संसद में सांसद रहे। अटल बिहारी वाजपेयी एक व्यक्ति का नाम नहीं है, बल्कि एक विचारधारा का नाम है। उनमें मर्यादा पुरूषोत्तम श्रीराम की संकल्प शक्ति भगवान कृष्ण की राजनीतिक कुशलता और आचर्य चाण्क्य की निश्चयत्मिका बुद्धि है। वे जीवन भर भारतीय राजनीति में सक्रिय रहे।

प्रधानमंत्री अटल जी ने पोखरण में अणु–परीक्षण करके संसार को भारत को शक्ति का एहसास करा दिया। कारगिल–युद्ध में पाकिस्तान के छक्के–छुड़ाने वाले तथा उसे पराजित करने वाले भारतीय सैनिकों का मनोबल बढ़ाने के लिए अटल जी अग्रिम चौकी तक जाए। उन्होंने अपने एक भाषण में कहा था –"वीर जवानों हमें आपको वीरता चर गर्व है। आप भारत माता के सच्चे संपूत है। पूरा देश आपके साथ है। हर भारतीय आपका आभारी है।"

अटल जी न सिर्फ एक उच्च कोटि के राजनेता है बल्कि एक संवेदनशील कवि, एक विचारवान लेखक, पत्रकार के साथ–साथ एक सच्चे व नेक इंसात भी है। वे जन–जन से प्रेम करने वाले जननायक है। जाति, धर्म, सम्प्रदाय, देश–विदेश के संकुचित भावों से ऊपर उठे अटल जी भारत के महान नेता है जिनके ह्रदय में सबके प्रति समान प्रेम है। ऐसा सब उनके कवि ह्रदय

के कारण है। राष्ट्रहित और राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रबल पक्षधर श्री अटल जी राजनेताओं में नैतिकता के प्रतीक है। अटल जी, भारतीय राजनीति गगन के ध्रुव नक्षत्र बन गए है।

ग्वालियर में शिंदे की छावनी में 25 दिसंबर सन् 1924 ई० को ब्रह्ममूहूर्त्त में अटलजी का जन्म हुआ। अटल जी के पिता श्री पं० कृष्ण बिहारी जी अध्यापक के साथ–साथ काव्य–रचना भी करते थे। उनकी कविताओं में राष्ट्र प्रेम के स्तर भरे रहते थे। उन दिनों वे ग्वालियर के प्रख्यात कवि थे। ग्वालिय राजदरबार में भी उनका मान सम्मान था। अटल जी की माता जी का नाम श्रीमति कृष्ण देवी थी। पं० कृष्ण बिहारी जी के चार पुत्र अवध बिहारी, सदा बिहारी, प्रेम बिहारी, अटल बिहारी तथा तीन पुत्रियों बिमला, कमला, उर्मिला हुई। परिवार भरा–पूरा संपन्न था।

अटल जी की रग रग में बचपने से ही परिवार का विशुद्ध भारतीय वातावरण रचने बसने लगा। परिवार 'संघ' के प्रति विशेष निष्ठावान था। परिणामतः अटल जी का झुकाव भी उसी ओर होने लगा और वे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयं सेवक बन गए। वातावरण और वंशानुक्रम दोनों ने अटल जी को वाल्यावस्था से ही प्रखर राष्ट्रभक्त बना दिया। जो उनके पूरे जीवन काल में देखी जा सकती है।

वाजपेयी की राजनीति केवल राष्ट्र के लिए होती थी। यहीं कारण है कि अटल बिहारी वाजपेयी कभी–कभी अपने दलगत विचारी और सिद्धांतों से बिल्कुल ही अलग छोर पर खड़े मिलते है। अलट जी के विचारों से राष्ट्रवाद की भावना कूट–कूट कर भरी हुई है। उन्होंने कभी नाम की राजनीति नहीं की, जो वर्त्तमान परिपेक्ष्य में भारतीय राजनीति का आधार बन चुकी है। अटल जी का राष्ट्रप्रेम इसी बात से साबित हो जाता है। अटल जी का राष्ट्रप्रेम इसी बात से साबित हो जाता है, कि अपने विपक्ष द्वारा उठाए गए राष्ट्रोन्मुखी कदमों के लिए उनकी पीठ भी बेहिचक अपनी राजनीति का घाटा–लाभ को देखे बिना थपथपा देते थे। उनका मानना था कि भारतीय राष्ट्रवाद दुनिया की नजरों में और ज्यादा मजबूत हुआ है।"4

सदन में जब भी अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति पर बहस हुई उनके भाषणों में राष्ट्रवाद की झलक देखी गई। हर पल इस बात का ख्याल रखते थे कि राष्ट्रहितों को क्षाति न पहुँचे। मार्च 1960 ई० को तिब्बत मे मुद्दे पर विदेश मंत्रालय द्वारा अनुदान मांग पर चर्चा हुई जिसमें वाजपेयी जी ने भी भाग लिखा और अपने भाषणों से यह बता दिया कि उनकी दृष्टि कितनी दूरगामी है। वे कहते है – "हम शांति चाहते है, मगर शांति के लिए ऐसी कीमत नहीं देनी चाहिए जो भविष्य में अशांति उत्पन्न करने का कारण बन जाए। शांति की लालसा में कमी ऐसे भी समझौते हुए है जो हमारे देश के हितों के अनुकूल नही हैं। बातचीत दिल्ली में हो रही है, दिल्ली का इतिहास समर्पण का इतिहास है। चीन के प्रधानमंत्री आ रहे है, क्या ले जाएँगे यह कहना मुश्किल है। लेकिन देश की जनता कोई भी ऐसा समझौता स्वीकार नहीं करेगीं जो समझौता देश की प्रतिष्ठा के प्रतिकूल हो, जो समझौता देश के हितों के प्रतिकूल हों।"[5]

लोकसभा में पंजाब राज्य के संबंध में अधिघोषणा के अनुमोदन हेतु प्रस्ताव के अवसर पर वाजपेयी जी का भाषण उनके राष्ट्रवाद को इस प्रकार स्पष्ट करता है : – "मैं अकाली दल

से एक बात कहनेवाला था कि वे सिक्खों के लिए अलग कौम शब्द का प्रयोग करते है। कौम शब्द प्रयोग पर मुझे कोई आपत्ति नहीं है, क्योंकि कौम का अर्थ है कम्युनिटी, उसका अर्थ है जाति लेकिन वे अंग्रेजी में नेशन लिखते है, इसे भ्रम की स्थिति कहा जा सकता है। हमने दो राष्ट्रों के सिद्धांतों को नहीं माना है। हम बहुराष्ट्र के सिद्धांत को नहीं मानते। मजहब के आधार पर राष्ट्रीयता नहीं चल सकती। महजब के नाम पर पाकिस्तान बताया, वह बंट गया, बंग्लादेश अलग हो गया। ईरान–इराक आपस में लड़ रहे हैं। एक राष्ट्र में अनेक राष्ट्रीय मजहब को मानने वाले लोग रह रहे है और एक मजहब मानने वाले अनेक राष्ट्र हो सकते हैं। अकाली कहते हैं कि वे हिंदू नहीं है। मै मान लूँगा, लेकिन मैं उनसे कहूँगा कि आप भारतीय तो है। इतना ही काफी है।"[6] वाजपेय के राष्ट्रधर्म को अधिक स्पष्ट करता है उनका ताशकंद समझौते पर राज्य सभा में दिया गया ये भाषण जिसने उन्होंने कहा – "जब से हमने ताशकंद–घोषणा पर दस्तखत किए तबसे समर्पणवादियों का बल बढ़ा है लोग मांग कर रहे है कि यदि कुछ देकर पाकिस्तान के साथ समझौता हो सकता है तो चीन से अक्साचिन की भेंट चढ़ाकर शांति का सौदा क्यों नहीं कर लिया जाता है मुझे डर है कि अगर यही रवैया रहा तो देश फिर से संकट में फंस जाएगा। हमारे जवानों ने अपने बलिदानों से लड़ाई के मैदान में जो कुछ प्राप्त किया है उसको हमने टेबुल पर बाँटकर गंवा दिया है। हम युद्ध में जीत गए थे, मगर संधि में हार गए है। हम शांति की मृगमरीचिका में न फंसे। देश फिर से खतरे में पड़ जाएगा।"[7]

श्री वाजपेय केवल राजनीतिज्ञ ही नहीं अपितु एक साहित्यकार कवि भी थे और उनकी रचनाओं में भी राष्ट्रवाद की अवधारणा स्पष्ट की लक्षित होती है। इस संदर्भ में उनकी एक कविता को हम देख सकते है–

"अब न चलेगा राष्ट्रप्रेम का गर्हित सौदा,
यह अभिनव चाणक्य न फलने देगा विष का पौधा।
तन की शक्ति, हृदय की श्रद्धा, आत्म–तेज की धारा,
आज जागेगा जग–जननी का सोया भाग्य सितारा।"[8]

इस रूप में भी वाजपेयी एक सच्चे राष्ट्र भक्त लगते हैं। उनकी यह सोच कि लोग झूठी देश भक्ति का ढ़ोंग करते हैं वे कभी भी देशभक्त नहीं हो सकते और मान–सम्मान के पात्र नहीं हो सकते। ऐसे लोग निंदा के दुष्पात्र होते हैं। आज के संदर्भ में उनकी यह विचार–दृष्टि प्रासंगिक है। राष्ट्रवाद की लुप्त होती प्रवृत्ति का ही प्रतिफल है कि हम आतंकवाद को झेलने के लिए विवश हैं। इतना ही नहीं राष्ट्रवाद जिस दिन पर भारतीय के दिल में बैठ जाएगा उस दिन कई असाध्य समस्याएँ हमारे राष्ट्रतल से अपने आप तिरोहित हो जाएगी। स्वार्थवाद, भ्रष्टाचार, जातिवाद, संप्रदायवाद और क्षेत्रवाद एवं भाषावाद राष्ट्रवाद की गंगा में समहित हो जाएगा, अस्तित्वहीन हो जाएगा। तब भारत में एक ही वाद बचेगा जो गंगा की तरह उसी के समतुल्य पवित्र होगा। वह है राष्ट्रवाद। राष्ट्रवाद के संदर्भ में वाजपेयी का प्रयास सचमुच में एक दूरगामी विचारक का चिंतक माना जा सकता है।

संदर्भ ग्रंथ

1. विजय त्रिवेदी, *हार नहीं मानूँगा* (एक अटल जीवन गाथा) पृ०सं० **98**
2. http ://yexpress.blogspot.in/2015/05/blog-post. 7.htmi
3. मार्ग रीटाबर्न्स : *द इंडियन प्रेस इन्ट्रोडक्शन* पृ०सं० **13**
4. *दुरदर्शन साक्षात्कार* : 22 सितंबर 2001
5. *लोकसभा भाषण* ; 17 मार्च 1960
6. डॉ० ना०मा० घटाटे, *मेरी संसदीय यात्रा,* भाग – 2 पृ०सं० **134**
7. वहीं, भाग – 4 पृ०सं० **319**
8. अटल बिहारी वाजपेयी, *मेरी इक्यावन कविताएँ,* पृ०सं० **38**